IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, November 2023

प्रेमचंद के लेखन की विशिष्ट ग्रामीण परिवेश

गायत्री शर्मा[1] and डॉ. शेषलता यादव[2]

शोधार्थी, हिंदी विभाग[1]

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग[2]

सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

शोध संक्षेप

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने अपने लेखन में भारतीय ग्रामीण जीवन का जीवंत चित्रण किया है। साहित्य को समाज से जोड़ने का काम प्रेमचन्द ने किया। उन्होंने किसानों के समस्याओं को अनेक प्रकार से रूपायित किया है। उनके साहित्य में देसी मिटटी की सुगंध को आसानी से महसूस किया जा सकता है। उन्होंने शोषण के जिन तरीकों को बताया है, कमोबेश वही तरीके आज भी दिखाई दे जाते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

[1].वरदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 80

[2].रंगभूमि, प्रेमचंद, पृष्ठ 280

[3].वरदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 158

[4].कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृष्ठ 03

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in